खसरा विषाणु परीक्षण हेतु व अदालत में डॉ. स्टीफन लंका की जीत ...

डॉक्टर लंका की प्रेस से वार्ता

सन 1990 से, जर्मन जीवविज्ञानी डॉ. स्टीफन लंका ने चिकित्सा सिद्धांत को चुनौती देने में सबसे आगे रहें हैं कि विषाणु हेपेटाइटिस, एड्स, संक्रमण, पोलियो, दाद, या खसरा जैसे संक्रामक रोगों का कारण है। कैरोलीन मार्कोलिन ने अपने व्याख्यान वीडियो "विषाणु उन्माद" में महान विवरण में डॉ. लंका की गतिविधियों को प्रस्तुत किया है (इस वेबसाइट पर रिकॉर्डिंग का भाग 2 देखें - 08:08 से शुरू)।
वायरोलॉजी में अपने अध्ययन के आधार पर, डॉ.लंका ने पाया कि विषाणु सरल जीवन-रूपों के महत्वपूर्ण घटक हैं जो मानव,

पशु या पौधों जैसे जटिल जीवों में उपस्थित नहीं हैं।

उनके शोध से पता चलता है कि विषाणु वास्तव में साधारण कोशिका कणों में होते हैं जिन्हें "वायरल संक्रमण" का कारण मानकर थे गलत तरीके से वायरस के घटक के रूप में व्याख्या किया गया है और प्रश्नात्मक घेरे में रखा गया है। डॉ. लंका ने यह भी निर्धारित किया कि विषाणु का पोषिता पर विनाशकारी प्रभाव नहीं होता, जैसा कि आमतौर पर माना जाता है।
ये निष्कर्ष डॉ. राइक गिर्ड हैमर की खोजों के अनुसार पूर्ण हैं, जिन्होंने 1980 के दशक में पहले से ही प्रदर्शन किया था कि मानक सिद्धांत के विपरीत, विषाणु जीव को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं, बल्कि रोगों की चिकित्सा प्रक्रिया के दौरान सहायक भूमिका निभाते हैं (देखें चौथा जैविक) नई चिकित्सा का नियम)। इसने बचपन में टीकाकरण के औचित्य और सामान्य रूप से टीकाकरण के बारे में भी चर्चा की।

डॉ. स्टीफन लंका और जर्मन मेडिकल चिकित्सक डेविड बार्डेस के बीच "खसरा विषाणु का परीक्षण" अब तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखने को मिला है (सी.टी.वी समाचार, कनाडा और बी.बी.सी समाचार में 2015 की रिपोर्ट देखें)। अदालत का मामला न केवल चल रही "विषाणु बहस" को गर्मा चुका था,वरन इसने बचपन में टीकाकरण के औचित्य और सामान्य रूप से टीकाकरण के बारे में भी चर्चा की।

यहाँ अदालत की कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है:

24 नवंबर, 2011 को, डॉ.लंका ने अपनी वेबसाइट पर घोषणा की कि वह खसरा विषाणु के अस्तित्व को साबित करने वाले किसी व्यक्ति को 100,000 यूरो का पुरस्कार प्रदान करेगा। घोषणा इस प्रकार है: "इनाम का भुगतान किया जाएगा, अगर एक वैज्ञानिक प्रकाशन प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें खसरा विषाणु के अस्तित्व पर न केवल जोर दिया जाता है, बल्कि यह भी साबित होता है और जिसमें, अन्य चीजों के साथ, खसरे के विषाणु का व्यास निर्धारित किया जाता है।"

जनवरी 2012 में, डॉ. डेविड बार्डेस ने डॉ. लंका को अपनी प्रतिज्ञा पर ले लिया। उन्होंने इस विषय पर छह कागजात पेश किए और डॉ. लंका को 100,000 यूरो अपने बैंक खाते में स्थानांतरित करने के लिए कहा।

छह प्रकाशन इस प्रकार हैं:

1.खसरे के रोगियों से साइटोपैथोजेनिक एजेंटों के ऊतक संस्कृतियों में प्रसार हेतु जे.एफ, पीबल्स टीसी का समर्थन करता है।

प्रोक सो एक्सप एक्सप बायोल मेड। 1954 जून; 86 (2): 277–286

2. बीच वी, मैग्नस पी.वी. बंदर के वृक्क की ऊतक संस्कृतियों में खसरा विषाणु पर अध्ययन, एक्टा पैथोल माइक्रोबॉयल स्कैंड। 1959, 42 (1): 75-85

3. होरिकामी एसएम, मोयर एसए। खसरा वायरस की संरचना, प्रतिलेखन और प्रतिकृति। कर्ट टॉप माइक्रोबायोल इम्युनोल। 1995; 191: 35–50।

4. नकई एम, इमैटेवा डीटी। खसरा विषाणु प्रतिकृति की इलेक्ट्रॉन अणुवीक्षण यंत्र का प्रयोग । जे विरोल. 1969 फरवरी; 3 (2): 187–97।

5. लुंड जी.ए, टायरेल, डी.एल, ब्रैडली आर.डी, स्क्रबा डी.जी। खसरा विषाणु आर.एन.ए की आणविक लंबाई और खसरा न्यूक्लियोकैप्स के संरचनात्मक संगठन। जे जनरल विरल. 1984 सितंबर, 65 (पी.टी.9): 1535–42।

6.डिकोको ई, मोरिटा सी, कोनो टी, सानो के। मॉर्फोलॉजी का विश्लेषण और खसरा विषाणु कण का संक्रमण।ओसाका मेडिकल कॉलेज के बुलेटिन। 2007; 53 (2): 107-14।

डॉ. लंका ने पैसा देने से इनकार कर दिया क्योंकि उनकी राय में इन प्रकाशनों ने पर्याप्त सबूत नहीं दिए थे। इसके बाद, डॉ. बार्डेस डॉ. लंका को अदालत में ले गए।

12 मार्च, 2015 को दक्षिणी जर्मनी में डिस्ट्रिक्ट कोर्ट रेवेन्सबर्ग ने फैसला सुनाया कि डॉ.लंका को भुगतान करने के लिए विज्ञापन के मानदंड को पूरा किया गया था। डॉ.लंका ने विनिर्णय अपील की।

16 फरवरी, 2016 को स्टटगार्ट (ओ.एल.जी) के उच्च क्षेत्रीय न्यायालय ने यह देखते हुए कि डॉ. बार्डेस ने मानदंडों को पूरा नहीं किया, क्योंकि वह एक प्रकाशन में प्रस्तुत खसरा विषाणु के अस्तित्व के लिए सबूत देने में विफल रहे।इसलिए पहले फैसले का पुनर्मूल्यांकन किया। इसलिए डॉ.लंका को पुरस्कार राशि का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है।

16 जनवरी, 2017 को जर्मन फेडरल कोर्ट ऑफ जस्टिस (बी.जी.एच) के पहले सिविल सीनेट ने ओएलजी स्टटगार्ट के फैसले की पुष्टि की।

न्यायिक फैसले के आलोचकों का तर्क है कि डॉ.लंका की जीत पूरी तरह से इस बात पर आधारित है कि उन्होंने इनाम के प्रस्ताव को कैसे तैयार किया, अर्थात् सबूत के एकल प्रकाशन की प्रस्तुति के लिए 100,000 यूरो का भुगतान करने के लिए (जो डॉ.बर्डेस प्रदान करने में असमर्थ था)। यह तर्क, हालांकि आवश्यक बिंदुओं से ध्यान भटकाता है।

अदालती कार्यवाही के मिनटों के अनुसार (पृष्ठ 7/पहला पैराग्राफ), एंड्रियास पोडीबेल्स्की, रोस्टॉक के विश्वविद्यालय अस्पताल में चिकित्सा सूक्ष्मजीवविज्ञान, विषाणु विज्ञान और स्वच्छता विभाग के प्रमुख, जो परीक्षण के नियुक्त विशेषज्ञों में से एक थे, उन्होंने कहा कि भले ही खसरे के विषाणु का अस्तित्व डॉ.बार्डेस द्वारा प्रस्तुत छह पत्रों के सारांश से निकाला जा सकता है, लेकिन लेखकों में से किसी ने भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परिभाषित नियमों और अच्छे वैज्ञानिक अभ्यास के सिद्धांतों के अनुसार कोई नियंत्रित प्रयोग नहीं किया था (विधि भी देखें "अप्रत्यक्ष साक्ष्य")।
प्रोफेसर पोडीबेल्स्की ने नियंत्रण प्रयोगों की इस कमी को इन प्रकाशनों की "पद्धतिगत कमजोरी" के रूप में स्पष्ट रूप से माना है, जो कि इस विषय पर सभी प्रासंगिक अध्ययनों के बाद हैं ("खसरा विषाणु" के अस्तित्व को साबित करने की कोशिश करने के लिए कोई अन्य प्रकाशन नहीं हैं)।
इस प्रकार, इस बिंदु पर, खसरा विषाणु के अस्तित्व के बारे में एक प्रकाशन जो अच्छे विज्ञान की परीक्षा देता है, वह अभी तक वितरित नहीं किया गया है।

इसके अलावा, परीक्षण में यह उल्लेख किया गया था कि संक्रामक रोगों के क्षेत्र में सर्वोच्च जर्मन प्राधिकरण, रॉबर्ट कोच इंस्टीट्यूट (आर.के.आई) के अनुसार एक्ट 4 संक्रमण संरक्षण अधिनियम (आई.एफ.एस.जी) के अनुसार, कथित खसरा विषाणु और इन्हें प्रकाशित करने व इसके लिए परीक्षण करने में विफल रहा है। आर.के.आई का दावा है कि इसने खसरा विषाणु पर आंतरिक अध्ययन किया, हालांकि, परिणामों को सौंपने या प्रकाशित करने से इनकार कर दिया।

डॉ. लंका: "खसरा विषाणु के परीक्षण में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के साथ, कथित खसरा विषाणु, खसरे की संक्रामकता और खसरे के खिलाफ टीकाकरण के लाभ और सुरक्षा पर किसी भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बयान के बाद से, बिना किसी वैज्ञानिक पहचान के हैं।" इस प्रकार उन्हें कानूनी आधार से वंचित कर दिया गया।"

www.LearningGNM.com